Artistic Narration Vol. XIV No. 1 Jan.-June 2023 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

# अमृता शेरगिल की कला पर पॉल गौगां के प्रभाव के मूलभूत आधार

**डॉ० रश्मि रजत**
*विभागाध्यक्ष एवं प्रवक्ता*
*ड्राइंग एवं पेटिंग विभाग*
*सुशीला इण्टर कॉलिज, गाजियाबाद*
*ईमेलः dr.rashmirajat@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

**डॉ० रश्मि रजत**

*अमृता शेरगिल की कला पर पॉल गौगां के प्रभाव के मूलभूत आधार*

Artistic Narration 2023, Vol. XIV, No. 1, Article No. 2 pp. 9-17

**Online available at:**
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

***सारांश***

*अमृता शेरगिल भारतीय कलाकारों की श्रेणी में प्रथम गण्य है। कला की मंजिल की ओर बढ़ते हुऐ अमृता ने भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति को कैनवास पर उतारने में वही भूमिका अदा की, जो ताहिती जीवन के चित्रण के लिये पॉल गौगां ने अपने लिये निर्धारित की थी। जब अमृता गोगां से प्रेरित हुई थी तो वह केवल गौगां के रूप आकारों और रंगो के आकर्षण में नहीं बंधी थी, गौगां में अमृता को नये और पुराने का अद्वितीय मिश्रण देखने को मिला था। गौगां ने फ्रांस छोड़ने के बाद ताहिती के जीवन में स्वतंत्रता की आत्मा की तस्वीर देखी थी। उन्होंने ताहिती सम्बन्धी अपने चित्रों के माध्यम से स्वतन्त्रता की नई परिभाषा उजागर की थी। अमृता ने भी अपने चित्रों के द्वारा भारत की आत्मा की पहचान शुरू की थी। अमृता के लिए भारत के ग्रामवासी गौगां के ताहिती निवासियों के प्रतिरूप थे। पॉल गौगां ही वह कलाकार है जिन्होंने अमृता शेरगिल को अपनी खुद की शैली निर्धारित और प्रतिष्ठापित करने की गहरी प्रेरणा दी। देखने में अमृता शेरगिल के चित्रों में बनी हुई आकृतियाँ एकदम सादी और सपाट लगती है जैसे पॉल गौगां के चित्रों की आकृतियाँ। अपनी शैली के विषय में अमृता शेरगिल ने स्वयं लिखा है– 'अच्छी कला हमेशा ही सादगी की तरफ उन्मुख होती है अर्थात वह केवल मूल तत्वों पर ही ध्यान देती है। चित्र विषय के सौन्दर्य की अपेक्षा कलाकृति में टेक्सचर और आकृतियों की बनावट की सुन्दरता पर ज्यादा जोर दिया जाता है।'*

***मुख्य बिन्दु***

*अमृता शेरगिल, पॉल गौगां, दुःखी, सपाट आकृतियां, शोक संतृप्त, दुखी चेहरे।*

*डॉ० रश्मि रजत*

## प्रस्तावना

अमृता शेरगिल समाज में समानता की भावना का संचार करना चाहती थी। उनके चित्रों के विषय आधुनिक भारतीय कला में बिल्कुल नवीन थे। पॉल गौगां के चित्र भी इसी प्रकार है। गौगां मार्टिनिक्यू, पोन्टएवन और ताहिती गये और उन्होंने वहाँ की गरीब स्त्रियों और पुरूषों के चित्र बनाये। पॉल गौगां के इन चित्रों का अमृता शेरगिल पर गहरा प्रभाव पड़ा। अमृता के चित्रों में इधर–उधर देखते हुए दुःखी चेहरे, उनकी शोक संतृप्त भाव भंगिमाए दर्शक के ह्रदय को सहज ही स्पर्श कर लेती है। चित्रों में अमृता ने जो मनः स्थितियाँ चुनी है उनमें पॉल गौगां का प्रभाव स्पष्ट है। आर्चर ने तो यहाँ तक लिखा है– कि अमृता के लिए गौगां ही भारत था और जब वह भारत लौटी तो भारत उनके लिये गौगां हो गया।[2]

## अमृता शेरगिल व पॉल गौगां का संक्षिप्त जीवन परिचय

अमृता शेरगिल का जन्म 30 जनवरी 1913 को हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में हुआ था। उनके पिता का नाम उमराव सिंह शेरगिल था जो धनवान सिक्ख जागीरदार थे, उनकी माता का नाम मेरी अन्तवाइनेत था, जो हंगरी की थी। अमृता का शुरूआती बचपन बुडापेस्ट में ही बीता, उसके बाद 1921 में भारत आकर अमृता ने अपने बचपन का अधिकांश समय माडलों की सहायता से चित्रण में लगाया। तत्पश्चात उनका पेरिस के प्रसिद्ध आर्ट स्कूल में शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। उनकी पेंटिग 'यंग गर्ल्स' को पेरिस में ''एसोसिएशन ऑफ द ग्रैंड सैलून' तक पहुँचने का मौका मिला। यहाँ पर अमृता की चित्रकारी की प्रदर्शनी लगी थी। यहाँ तक पहुँचने वाली यह पहली महिला एशियाई चित्रकार रही थी। 1934 में वह भारत लौटी और यहाँ आकर उन्होनें खुद को भारत की परम्परागत कला की खोज में लगा दिया और 1941 में अपनी मृत्यु तक यह कार्य करती रही। मुगल और पहाड़ी चित्रकारी से भी अमृता प्रभावित हुई और अजंता की गुफाओं की चित्रकारी ने भी उन्हें प्रभावित किया। पूर्व और पश्चिम का संगम उनके जीवंत कैनवास में स्पष्ट है।

पॉल गौगां का जन्म 7 जून 1848 को पेरिस में हुआ था। पॉल गौगां के पिता क्लोविस गौगां एक पत्रकार थे। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् गौगां ने अपना बाल्यकाल अपनी माता एलिन के साथ पेरू में बिताया। पेरू का अमिट प्रभाव जीवन पर्यन्त गौगां के साथ रहा। एलिन 1853 में फ्रांस वापिस आ गयी। 1865 में पॉल गौगां ने सत्रह वर्ष की आयु में समुद्री व्यापार में कदम रखा। 1871 में फाइनेंस के क्षेत्र में अपना कैरियर आरम्भ किया। 1873 में पॉल गौगां का मेटी सोफी गेड से विवाह हुआ, किन्तु मेटी का गौगां से विवाह कटु अनुभव रहा। पॉल गौगां ने 1873 में अपनी चित्रकला का आरम्भ किया, उनका कला से परिचय गस्टेव अरोजा के द्वारा हुआ था। गस्टेव अरोजा के पास आधुनिक चित्रों का व्यक्तिगत संग्रह था। 1874 में गौगां ने प्रथम प्रर्दशनी देखी और वे कलाकारों की कृतियों को एकत्रित करने लगे। उन्होंने कोरो और प्रभाववादियों की प्रंशसा की और मुख्य रूप से पिस्सारों की। 1880 की प्रदर्शनी में उनकी एक

पैंटिग 'स्टडी ऑफ द न्यूड' की प्रशंसा करते हुए साहित्यकार जे.के. ह्यसमनस ने कहा था– 'मुझे यह कहने में बिल्कुल हिचक महसूस नही हो रही है कि अब तक जितने भी कलाकारों ने इस विषय पर कार्य किया है इतनी पवित्रता और वास्तविकता के साथ किसी ने भी नही पेश किया है। जितनी की गौगां ने, ये पहले कलाकार है जिन्होने आज की नारी को दर्शाने में कोई कसर नही छोडी है और उनकी सफलता निश्चित है।[3] 36 वर्ष की आयु में उन्होने एक नया जीवन शुरू किया, उन्होने अपनी डायरी में लिखा है– 'अब से मैं प्रत्येक दिन चित्रांकन करूंगा, मेरा कलात्मक केन्द्र मेरे मस्तिष्क में है और मैं जो करता हूँ वह मेरे अन्दर है।'[4]

गौगां की कृतियाँ मानसिक प्रतिभा वाली तथा तेज भावों वाली है। इनकी कृतियों में दुःख निहित है मानव दुःख। गौगां ने महसूस किया कि उनके विचारों में बदलाव आ रहा है और उन्होने फैसला किया कि वह ताहिती जायेंगे। वह यह महसूस करते है कि उनकी कला जिसने अभी जन्म लिया है वह वहाँ के जंगली और पुराने वातावरण में खूब फलेगी। ब्रिटेनी में रहते हुए गौगां को अपनी आर्थिक परिस्थिति में कोई सुधार होने की आशा दिखायी नही दे रही थी। आधुनिक सभ्यता से दूर जाकर नैसर्गिक वातावरण की छाया में कला साधना करने के विचार से वे तडप रहे थे। 1891 में पॉल गौगां ने ताहिती जाने का निश्चिय किया। गौगां ने शफनकर से कहा था– 'कला विचारों का वर्गीकरण है प्रकृति के सामने रहकर स्वप्न देखकर प्रकृति से सार निकालों और उस सृजन के विषय में सोचो जो परिणाम देगा। ईश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग यह है कि वह करो जो वह करता है सृजन...[5]

पॉल गौगां ने अपने ताहिती के कार्य के बारे में नोय–नोय में लिखा है– मैने कार्य आरम्भ किया, लेखों और सभी प्रकार के रेखा चित्रों पर। प्राकृतिक चित्र में प्रत्येक दृश्य ने मुझे दृष्टिहीन कर दिया। यूरोप से आकर मैं सदैव कुछ रंगो के विषय में दुविधा में था, इधर–उधर की हाँक रहा था और यद्यपि यहाँ मेरे कैनवस पर लाल और नीले रंग को उपस्थित करना कितना सरल था। छोटी नदियों में स्वर्ण के रूपों ने मुझे मोहित कर दिया। मैं क्यों उस सोने को मेरे कैनवस पर उडेलने और सूर्य की चमक का आनन्द उडाने में हिचकिचा रहा था? सम्भवतः यूरोप की पुरानी आदतों के कारण।[6]

8 मई 1903 में उनकी मृत्यु के पश्चात् 1906 में सैलून द ओटम' पेरिस में उनके कार्यो की प्रर्दशनी लगी। तब से कई प्रर्दशनियाँ लगी और उन पर कई किताबें लिखी गयी, उनका जीवन और कार्य व्यर्थ नही गया। कला में उनका विश्वास और उस पर पूरी तरह समर्पित गौगां, कठिनाइयाँ जो उन्होनें अपने जीवन काल में झेली इन सबका पारितोषिक उन्हें मिला और पॉल गौगां अब आधुनिक कलाकारों में पर्याप्त ऊँचे स्थान पर है।

## अमृता शेरगिल व पॉल गौगां की कला का स्वरूप

अमृता ने अपने कृतित्व से भारतीय चित्रकला में आधुनिक युग का श्री गणेश किया। लोक जीवन के प्रति संवेदना के कारण वैभव में जीवन बिताते हुए भी भारतीय जीवन के दैन्य

को पहचाना। सामान्य जन के संर्घषरत जीवन में व्यापत निराशा और उनकी आँखों में बसे रीतेपन को पहचाना। कन्हैयालाल नन्दन का कहना उचित है– जिसका समस्त शैशव यूरोप की बर्फ धुली धरती में बीता हो, जिसकी माँ भारतीय न होकर हंगेरियन हो, जिसकी शिक्षा विदेशों में हुई हो, जिसे पश्चिम के कला स्वर्ग पेरिस ने खुलकर सम्मान दिया हो और जो स्वयं वैभव और समृद्धि के सुहाने सपनो में पली, वह अपने अंतरंग में इतनी अधिक भारतीय रही कि पश्चिम के सारे संस्कारों से नाता तोडकर यहाँ के जन–जीवन की करूणा वेदना से उन्होंने अपने को जोड़ लिया। उनमे कोई एक अदृश्य सृजन शक्ति थी, जिनका अंतरंग नितांत भारतीय था..[7] कला की मंजिल की ओर बढ़ते हुए अमृता ने भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति को कैनवास पर उतारने में वही भूमिका अदा की, जो ताहिती जीवन के चित्रण के लिए गौगां ने अपने लिये निर्धारित की थी। गौगां से अमृता ने न केवल विषयों के चुनाव की प्रेरणा ली थी बल्कि जो सबसे बड़ी बात गौगां से ग्रहण की थी,वह थी, अपने अतीत से मुक्ति पाना।

गौगां की कला में बच्चों जैसी सरलता और भोलेपन के रूप में प्रसन्नतादायक चमकीले रंग, नाटकीय वर्ण योजनाएँ, प्राकृतिक अनुपातो एवं वास्तविक रंगों की पूर्ण उपेक्षा आदि गुण मिलते हैं। गौगां एक आधारभूत और सरल शैली का विकास करना चाहतेथे। आधुनिक युग के अति सभ्य कहे जाने वालों से उनकी रूचि मेल नहीं खाती थी इसलिए वे आदिमरूपों की ओर झुके। जैसे–जैसे पॉल गौगांकी कला परिपक्व होती गयी, उसमे अधिकाधिक सरलता आने लगी। ताहिती में रहकर तेजस्वी सूर्य प्रकाश, चमकीले रंगों से नेत्रोद्दीपक प्राकृतिक वातावरण एवं गूढ़ शक्तियों का अंधविश्वास करने वाले भोले–भाले आदिवासियों के अनोखे रीतिरिवाजों को देखकर गौगां को ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने किसी ऐसी दुनिया में प्रवेश किया है जिसकी वे अभी तक खोज कर रहे थे।वे सभ्य यूरोपीयन जीवन को भूल गये व वहाँ के आदिवासियों की सुडौल साँवली आकृतियों, उनके रहन–सहन व रीति रिवाजों व प्रकृति के सुहावने दृश्यों को चित्रित करने में व्यस्त हो गये।

गौगां कहते थे–''मैं सत्यार्थ में आदिम हूँ।''[8]

**अमृता व पॉल गौगां की कला का वर्णन**

अमृता शेरगिल उस समय भारतीय चित्रकला में जन्मी थी जब भारतीय कला में नये परिवर्तनों की आवश्यकता थी। आज उन्हें भारतीय चित्रकला में आधुनिक तत्वों का समावेश करने वाले प्रथम अग्रदूत चित्रकारों में माना जाता है। वह भारत की सर्वप्रथम महिला चित्रकार थी जिसे पश्चिमी शैली कीकला सीखने का अवसर मिला और कला जगत में भरपूर सम्मान भी मिला, किन्तु इसके बाद भी वह अतृप्त थी और इसी तृप्ति की चाह में आजीवन भटकती रही।[9]

अमृता शेरगिल के चित्र पुरानी शैलियों की परिपाटी को तोड़कर जीवनधारा में प्रवेश के चित्र हैं उनकी कला कृतियाँ आधुनिक धारा के अनुरूप होते हुए भी अपनी मूल चेतना और आत्मा में पूर्णतः भारतीय है। उन्होने यूरोप के कलाकारों की कृतियों का बारीकियों से अध्ययन

किया। उनकी अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता, संयोजना, रंगों के प्रभावशाली उपयोग से उन्होंने जो अनुभव पाये, उन्हें अपने में आत्मसात कर नया व्यक्तित्व बनाने की कोशिश की। उन्होंने लगभग यह तय कर लिया कि यूरोप के आसमान के नीचे उनकी कला पनप नही सकती। भारत केलिए उनका मन ललक उठा– ''मैं नही समझती कि यूरोप में मैं चित्र बना पाऊँगी। ऐसा लगता है कि मैं भारत में काम कर सकूँगी। मैं यहाँ सहज नही हूँ, आत्म विश्वास नही रहा। यूरोप पिकासो, मातीस और ब्राक या दूसरे चित्रकारों का है, मेरा तो केवल भारत है।[10] अमृता शेरगिल ने भारत आने पर कहा–'जैसे ही मैने अपने पैर भारत की धरती पर रखे, मेरी पेंटिग में केवल विषय और भावना की दृष्टि से ही परिवर्तन नही आया, अपितु तकनीकी अभिव्यक्ति भी अपेक्षाकृत अधिक आधारभूत ढंग से भारतीय हो गयी। तभी मुझे अपने कलात्मक उद्देश्य की अनुभूति हुई, मुझे अपने चित्रों में भारतीय लोगों, खासकर गरीब भारतीय लोगों के जीवन का विश्लेषण करना है। अनंत समर्पण और सहिष्णुता की मौन छवियों को चित्रित करना है, कुरूपता में भी अद्भुत रूप से सुन्दर दुबले–पतले साँवले रंग वाले शरीरो को दर्शाना हैं। उनकी उदास आँखों का मुझ परपड़ने वाले प्रभाव को कैनवास पर उतारना है।[11]

अमृता ने अजंता की बौद्ध कला को अद्भुत रूप से सूक्ष्म और मोहक पाया। अजन्ता उनके लिए शुद्ध पेटिंग का महान और सनातन उदाहरण था। इसको देखने का मतलब मृत रूपाकारों की और लौटना नही था बल्कि यह तो अपने आप की खोज करने जैसा था। अजन्ता से उन्हें आकृतियों को शैलीबद्ध करने में, वस्तुओं को सपाट धरातल देने में तथा आयतन को कम करने में मदद मिली। अजंता मे प्राचीन कला की ओजस्विता व आंतरिक और अध्यु चित्रों का सौन्दर्य था अतः इससे उन्हें भारतीय रंगों की प्रचुरता के साथ अपनी निजी शैली खोजने की आवश्यक प्रेरणा प्राप्त हुई। इस सन्दर्भ में अमृता ने कहा था– 'अजन्ता! वह तो मेरी समझ से बाहर की चीज है. यद्यपि मैने अध्ययन किया है परन्तु जिसे चित्रकला की शिक्षा कह सकते है, वह यर्थाथ रूप में मुझे कभी नही मिली, क्योंकि मेरी मनः स्थिति का गठन कुछ इस प्रकार है कि कोई भी बाह्म हस्तक्षेप मुझे सहन नही। मैने सदैव सभी बातों में अपना मार्ग स्वयं योजना रूचिकर समझा।[12]

आधुनिक भारतीय कला में जो योगदान अमृता शेरगिल का रहा है वही योगदान पॉल गौगां का फ्रांस की चित्रकला में रहा है। अमृता की भांति ही पॉल गौगां भी एक संवेदनशील कलाकार थे। भावनाओं की अभिव्यक्ति में आदिम कला की स्वाभाविक अंकन पद्धति की व सरल आकारों की परिणामकारकता को पॉल गौगां ने महसूस किया। गौगां के मित्र डेनियल डी मोनफ्रिड ने उनके बारे में लिखा था– 'वह उस तथ्य की खोज में ताहिती गये जिसमें उनका विश्वास था, एक ऐसा देश जिसकी पुरानी तथा घिसी पिटी मान्यताएँ, वहाँ का वातावरण हमारे सभ्य समाज से भिन्न हो।[13] गौगां ने कहा कि 'उन्होने क्षितिजों का सूक्ष्म निरीक्षण किया, जीवन की लय को पशुओं और जीवन के साथ संयोजन के माध्यम से खोजा। रेखाएँ सरल और सशक्त

आकृतियाँ स्थापित करती हैं'।[14] गौगां के लिये ताहिती जीवन अति आकर्षक था वे उस संसार के अनोखेपन, कोमल संवेदनाओं, पुरानेपन, प्राकृतिक जीवन व वहाँ की नारियों की भाव भंगिमाओं से आकर्षित व भाव–विभोर थे। पॉल गौगां के मॉडल होते थे काम करते हुए किसान, मछुआरे, महिलाएँ, जो समुद्री किनारों पर नहाने आयी हुई होती, जहाजों वाले श्रमिक लडके जो किनारे पर घूमते होते, गृहणियों जो अपने घरो के आसापास होती, गड़रियें अपनी भेड़ों को खेतों की और ले जाते हुए इत्यादि।

गौगां इन लोगो से सम्बन्धित मुद्राओं को अपनी डायरी में उतार लेते फिर उसके आधार पर चित्रांकन करते। गौगां परेशान प्रकृति के व्यक्ति थे– वे अनन्त में खोये रहते। वे अपनी कृति से सन्तुष्ट नही होते थे बल्कि और बेहतर की तलाश में रहते। उनकी महत्वकांक्षाऐं उन्हे और अनदेखी कृतियों को करने को उत्साहित करती थी। उन्हे प्रकाश तथा रहस्य प्रेरित करते थे, वे सदैव अकेलेपन की तलाश में रहते थे। इससे उन्हें चिन्तन तथा अपने आपको समझने में आसानी होती थी। कृति बनाते समय जो भाव उनकी कल्पना में उतरते उन्हें वे अपने चित्रों में अवतरित कर लेते। गौगां मानते थे कि कलाकार के ऊपर यह बन्धन नही होता है कि वह किसी चित्र में कितने भाव, आकृति रेखाएँ तथा रंग दर्शाये। यह उस समय उसके रहते हुए विचारों पर निर्भर करता है। गौगां की कला में वनस्पति, पशु तथा मानव का प्रतिबिम्ब है, वह हमारे समक्ष गाँवों और जंगलों की अजीब सभ्यता दर्शाता है। इन जगहों में काली नारी आकृतियाँ देखने को मिलती है। सूर्य की किरणों से जली हुई लेकिन जैसे ये किरणे उनमें बसती है उन्हें दमकाती है और भावों की तीव्र चमक लिये हुए।

## अमृता शेरगिल की कला पर पॉल गौगां का प्रभाव

अमृता की कला पर गौगां का प्रभाव अनुकरण की सीमा तक छाया हुआ माना जाता है। हर कलाकार किसी न किसी वक्त अपने पूर्ववर्तियों से प्रभावित हुए बिना नही रहता। ऐसे अनेकों चित्र है जिसमे गौगां का प्रभाव साफ देखा जा सकता है यहाँ पर संक्षेप में कुछ चित्रों के उदाहरण दिये जा रहे है। पोट्रेट आफ ए गर्ल (वेटी गोपिल) (चित्र सं0 1) में एक युवती कुर्सी पर अपने हाथो को आगे बाँधें हुए बैग लटकाये बैठी है, वह सुन्दर वस्त्र पहने है पर उसके चेहरे पर प्रसन्नता दिखायी नही देती। वह उदास नेत्रों से सामने की ओर देख रही है। इस चित्र से प्रभावित अमृता का 'स्टडी आफ माडल 2' नामक चित्र है। (चित्र सं0 2)

इसमें एक उदास नेत्रों वाली महिला हाथों को आगे बाधें कुर्सी पर बैठे चित्रित है उसके नेत्रों से उदासीनता टपक रही है। चित्र में विरोधी रंगो का प्रयोग हैं।

पॉल गौगां के चित्र 'द ब्रूडिंग वूमन' (चित्र सं0 3) में उदास बैठी स्त्री अपने सामने रखे खाद्य पदार्थो को कोहनी से चेहरे को टिकाये झुकी नजरों से देख रही है। चेहरे पर उदासीनता के भाव है। अमृता शेरगिल के चित्र 'फल विक्रेता' (चित्र सं0 4) की बांयी तरफ बैठी बालिका बिल्कुल उसी तरह नीचे देख रही है जैसे गौगां के चित्र की महिला। यद्यपि चित्र में तीन

आकृतियाँ चित्रित है किन्तु तीनों के चेहरे पर उदासी के वही भाव है। पॉल गौगां के एक अन्य चित्र 'वोमेन एण्ड टू चिल्ड्रन' (चित्र सं0 5) में एक स्त्री दो बच्चों के साथ चित्रित है उस स्त्री की आँखों में करूणा साफ दिखायी देती है। पॉल गौगां के इस चित्र का प्रभाव अमृता शेरगिल के 'भारत माता' (चित्र सं0 6) में दिखायी देता है इसमें भी एक असहाय माता गोद में अपने गरीब पुत्र को लिये बैठी है। अमृता ने इस चित्र में धूमिल रंगो का प्रयोग किया हैं।

'वोमेन विद ए फ्लावर' (चित्र सं0 7) में पॉल गौगां ने एक ताहितियन युवती को हाथ में फूल पकडे चित्रित किया हैं। गौगां के इस चित्र से प्रभावित अमृता शेरगिल का 'पोट्रेट ऑफ हेलेन' (चित्र सं0 8) में देखा जा सकता है। यह स्त्री आकृति भी पॉल गौगां के चित्र की स्त्री आकृति की भाँति ही गहन चुप्पी साधे हुए है। इन चित्रों को देखकर लगता है कि जैसे दोनो स्त्रियाँ किसी गहन सोच में हैं। उन्हें हाथ में पकडे फूल से कोई सरोकार नही है। इसके अलावा पॉल गौगां ने अपने एक अन्य चित्र 'पोट्रेट आफ फ्रिटज स्कनीक्लूड' में फ्रिटज को वायलिन बजाते हुए चित्रित किया है। इससे मेल खाता अमृता का 'सिक्ख म्यूजिसियन्स' नामक चित्र है। दोनो ही चित्रों के पुरूष अपने संगीत में अन्तर्मन तक खोए है। पॉल गौगां के चित्र 'मैडम राउलिन' से मिलता अमृता का चित्र 'मेरी दादी' है। गौगां के 'ब्रिटिन वूमन इन प्रेयर' से मेल खाता अमृता का चित्र 'नमस्कार' है। इसके अलावा भी अन्य अनेकों चित्रों में अमृता शेरगिल पॉल गौगां से प्रभावित दिखायी देती हैं।

## निष्कर्ष

पॉल गौगां को ताहिती में अपना सपना मिल गया था। गौगां ने सादेपन, शालीनता तथा शान्ति का स्थान ढूंढ लिया था जिसमें उन्हे अपनी आकांक्षा को पूर्ण करने का अवसर मिला। गौगां की कृतियों की तुलना बीथोविन के संगीत से की जा सकती है।

अमृता के लिए भारत के ग्रामवासी गौगां के ताहिती निवासियों के प्रतिरूप थे। अपने चित्रों में एक से अधिक आकृतियों को समूह में रखना, तिर्यक आँखें, उदासी भरा परिवेश, उभरी भौहे, चौडे पैर, बालो को चित्रित करने का तरीका, आकृतियों का गठन, ये सभी विशेषताएं गौगां के प्रभाव से आयी थी। उनका अवसाद अमृता के मन में गहरा बैठता गया। अमृता भी पॉल गौगां की भांति ही वस्तु चित्रण, मानव आकृति चित्रण, नग्नाकृतियाँ एवं सामाजिक जन–जीवन के चित्रों में निरन्तर रूचि लेती रहीं। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में यथार्थवादी शैली की परिपाटी से हटकर सरल रूपाकृति में अधिक रूचि ली। पॉल गौगां के सरलीकृत रूपाकार निश्चित रूप से अमृता शेरगिल के लिये अत्यप्त प्रेरणादायी रहे।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वाजपेयी, राजेन्द्र. 'मार्डन आर्ट और भारतीय चित्रकार'. पृष्ठ **58.**
2. वाजपेयी, राजेन्द्र. 'मार्डन आर्ट और भारतीय चित्रकार'. पृष्ठ **58.**

3. Daniel, wildnstein., Raymond, Cogniat. Gauguin Thames & Hudson. London. Pg. **20.**
4. Impressionist Painters. Pub-Guy Jennings Hamlyn.
5. Alan, Bowness., Gauguin. Great artist collection. Pg. **7.**
6. Paul, Gauguin. (1961). "Noa Noa-Voyage to Tahiti." Bruno Cassior: Oxford. translated by Jonathan Griff in postcript by Jean Loize. Pg. **20.**
7. नन्दन, कन्हैयालाल. (1987). अमृता शेरगिल. पराग प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **42.**
8. साखलकर, र.वि. आधुनिक चित्रकला का इतिहास. पृष्ठ **115.**
9. काम्बोज, वी.पी. (1990). समकालीन कला. प्रकाशन ललित कला अकादमी. सं०–14. मई. सचिव ललित कला अकादमी. रवीन्द्र भवनः नयी दिल्ली. पृष्ठ **21.**
10. नन्दन, कन्हैयालाल. (1987). अमृता शेरगिल. पराग प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **14.**
11. (1965). अमृता शेरगिल. ललित कला अकादमी नयीः दिल्ली. रविन्द्र भवन प्रकाशित. पृष्ठ **5.**
12. Vyas, Chintamani. (1982). Amritashergil pub. Punjab Modern Academy of fine arts and crafts: Amritsar. April. Pg. **21.**
13. Frank, Elgar. A Zwemmer Gauguin. London & Fernand, Hazan, Paris. Pg. **21.**
14. Belinda, Thomson. Gauguin Thames & Hudrons. New York. Pg. **17.**

(चित्र सं0 1)

(चित्र सं0 2)

(चित्र सं0 3)

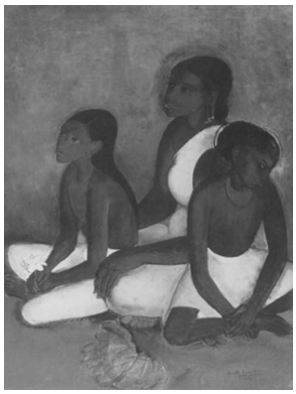

(चित्र सं0 4)

(चित्र सं0 5)

(चित्र सं0 6)

(चित्र सं0 7)

(चित्र सं0 8)